

दान-पुण्य की यह परम्परा, हुई जगत में शुभ प्रारम्भ ।  
 हो निष्काम भावना सुन्दर, मन में लेश न हो कुछ दम्भ ॥  
 चार भेद हैं दान धर्म के, औषधि-शास्त्र-अभय-आहार ।  
 हम सुपात्र को योग्य दान दे, बनें जगत में परम उदार ॥  
 धन वैभव तो नाशवान हैं, अतः करें जी भर कर दान ।  
 इस जीवन में दान कार्य कर, करें स्वयं अपना कल्याण ॥  
 अक्षय तृतीया के महत्त्व को, यदि निज में प्रकटायेंगे ।  
 निश्चित ऐसा दिन आयेगा, हम अक्षय-फल पायेंगे ॥  
 हे प्रभु आदिनाथ! मंगलमय, हम को भी ऐसा वर दो ।  
 सम्यग्ज्ञान महान सूर्य का, अन्तर में प्रकाश कर दो ॥  
 ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

अक्षय तृतीया पर्व की, महिमा अपरम्पार ।  
 त्याग धर्म जो साधते, हो जाते भव पार ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

\*\*\*\*

### दर्शन-स्तुति

निरखत जिनचन्द्र-वदन स्व-पद सुरुचि आई ।  
 प्रकटी निज आन की पिछान ज्ञान भान की ।  
 कला उद्योत होत काम-जामनी पलाई ॥निरखत. ॥  
 शाश्वत आनन्द स्वाद पायो विनस्यो विषाद ।  
 आन में अनिष्ट-इष्ट कल्पना नसाई ॥निरखत. ॥  
 साधी निज साध की समाधि मोह-व्याधि की ।  
 उपाधि को विराधि कै आराधना सुहाई ॥निरखत. ॥  
 धन दिन छिन आज सुगुनि चिन्ते जिनराज अबै ।  
 सुधरो सब काज 'दौल' अचल रिद्धि पाई ॥निरखत. ॥

— पं. दौलतराम